बी. ए. भाग-2
हिन्दी-रचना
'बेकारी का इलाज'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी. के. कॉलेज
डुमराँव, बक्सर

'बेकारी का इलाज' एकांकी - रामेश्वर सिंह काश्यप —

'बेकारी का इलाज' रामेश्वर सिंह काश्यप का एक व्यंग्य प्रधान एकांकी है। इसके दो प्रमुख पात्र संगीतज्ञ रंजन तथा साहित्यकार विपिन के द्वारा काश्यप जी ने समाज में प्रतिभा सम्पन्न संगीतज्ञ - साहित्यकार की मूल्यहीनता तथा अक्खड़ स्वभाव का चित्रण किया है। इस एकांकी की नायिका लीला का योगदान एकांकी की सफलता में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस समाज की उपेक्षा कृपणता, अर्थप्रधानता तथा अगुणग्राहकता रंजन तथा विपिन जैसे संगीतज्ञ - साहित्यकार को 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' की भूमिका पर लाकर खड़ा करता है।

एकांकी के दो प्रमुख पात्र रंजन और विपिन क्रमशः संगीतज्ञ तथा साहित्यकार हैं। मंच पर दोनों अपने - अपने भावी जीवन के कपोलकल्पित स्वप्न में विचरण करते हुए दिखाई देते हैं। दोनों ही सिर्फ ख्याली पुलाव पका रहे हैं। दोनों में बातें होती हैं जिससे पता चलता है कि दोनों अभावग्रस्त हैं। रंजन की हालात तो ऐसी है कि उसे रहने के लिए घर तक नहीं है, विपिन के घर पर रहता है। लेकिन है आशावान। तभी लीला की बातों पर चिढ़कर कहता है - "हँस लो भाभी। हँस लो एक उगते हुए कलाकार पर जब एक दिन मैं प्ले-बैक सिंगर हो जाऊँगा, तब मेरे ऑटोग्राफ के लिए तरसोगी, एक जरा-से दस्तखत के लिए समझी भाभी..... जब मेरे गीतों की धूम सारे हिन्दुस्तान में मच जाएगी

तब लोगों से यह कहने में तुम गर्व का अनुभव करोगी रंजन जी तो एक जमाने में इन्हीं लोगों के मकान रहते थे। बड़े अच्छे आदमी थे। आज न इतने बड़े हो गए हैं लेकिन एक दिन वह भी था जब दिन-भर भाभी-भाभी की रट लगाए रहते थे और मुझसे पैसे उधार लेकर सिगरेट पिया करते थे।"

बिपिन भी कब पीछे रहनेवाला, वह भी तपाक से कहता है- "ज्यादा रोब गालिब न किया करो। तुम मशहूर होकर आसमान पर चढ़ जाओगे और मैं क्या घास काटता रहूँगा। जनाब, वो दिन दूर नहीं जब मेरे उपन्यासों के एक हफ्ते में तीन-तीन संस्करण निकलेंगे। मेरी कहानियाँ पढ़े बगैर पेरिस की सुन्दरियों को नींद नहीं आएगी। हॉलीवुड की अभिनेत्रियाँ तो साफ एलान कर देंगी कि हम लोग फिल्म में काम तभी करेंगी जब बिपिन जी की कहानी होगी। जनाब मेरी किताबें खरीदने के लिए दुकानों पर मीलों ग्राहकों की क्यू लगी रहेगी....।"

रंजन और बिपिन दोनों ही आप मियाँ मिट्ठू बन रहे हैं। बिपिन की पत्नी लीला इसे झूठी तसल्ली कहती है। वह कहती है- भविष्य के आपलोग इतने लम्बे-चौड़े मंसूबे बाँधते हैं, सब्जबाग देखते हैं, और वर्तमान पर ध्यान नहीं देते। सिर्फ आसमान ताकने से क्या होगा, धरती भी देखिए। इस पर बिपिन कहता है- वर्तमान ध्यान देने लायक भी हो, यहाँ तो जिधर पाँव बढ़ाओ, उधर काँटे, जिधर आँख उठाओ, उधर अंधेरा। रंजन कहता है कि वह तो बाजार में छाता के सहारे जाता है। किस-किस

का पैसा उसने उधार ले रखा है, पता नहीं। इस पर लीला उन्हें प्रयासरत रहने की राय देती है। लीला की बातों का प्रतिकार करता हुआ रंजन कहता है- आजकल हर जगह गाई-भतीजावाद का बोलबाला है। सच्ची प्रतिभा और योग्यता को कौन पूछता है? बनवारी लाल संगीताचार्य मुझे संगीत विद्यालय में इसलिए बहाल नहीं कर रहा है कि मैं उसकी जाति का नहीं हूँ जबकि सभी उम्मीदवारों से अधिक योग्य हूँ। ऐसी ही बात बिपिन भी कहता है कि प्रकाशक नूपुरजी अपने अखबार के उपसम्पादक के पद पर मुझे न रखकर एक खूबसूरत कवयित्री को बहाल करने के चक्कर में है जो सम्पादकीय कम और उनका दिलबहलाव अधिक करे। सच्चाई यह है कि पूरा समाज ही ऐसे लोगों से भरा हुआ है।

दूसरे दिन रंजन और बिपिन मिलकर कमरे को ढंग से सजाते हैं। सजावट का सामान दूसरों से माँग कर ले आते हैं। लीला भी बनारसी साड़ी पहन और मेकअप कर पर्दे के पास खड़ी होती है और शरारत के साथ जैसे रंजन और बिपिन को पहचानती ही नहीं हो। इतने में ही सम्पादक और प्रकाशक नूपुर जी पधारते हैं। लीला उनकी अत्यधिक प्रशंसा करती है। और उसे अपनी बनावटी प्रेमपाश में फँसा लेती है। उन्हें अपने स्टेट रत्नगढ़ चलने के लिए राजी कर लेती है। जाते समय नुपूर जी लीला को सोने का हार देते हैं और अगले दिन शाम को चलने का प्रोग्राम बनाकर चले जाते हैं। जाते समय लीला को कानों का झुमका उपहारस्वरूप देते जाते हैं।

एकांकी के तीसरे दृश्य में उत्सुकता चरमोत्कर्ष पर तब पहुँच जाती है जब रंजन कवितर नूपुर जी पत्नी श्रीमती दुर्गा देवी और संगीताचार्य बनवारी लाल की पत्नी श्री मती रजनी देवी को लेकर आता है। नूपुर जी अपने बोरिया बिस्तर के साथ आते हैं। ठीक उनके पीछे बनवारी लाल भी बोरिया-बिस्तर लिए आ धमकते हैं। लीला नूपुरजी को रैक के पीछे-छिपा देती है। फिर दोनों रसिकों को अपनी-अपनी पत्नी से साक्षात्कार करा उससे सारी बातें लीला बतला देती है। नूपुर जी और बनवारी लाल का चेहरा इस समय तो देखते ही बनता है। दोनों वहाँ से भाग जाने का उपक्रम करते हैं तो रंजन और विपिन दोनों को पकड़कर बैठाते हुए पुलिस को बुलाने की बात करते हैं। इस पर बनवारी लाल रंजन को अपने विद्यालय में संगीत शिक्षक का और बनवारी लाल विपिन को उपसंपादक की नौकरी देने का वायदा करते हैं। यहीं एकांकी का पटाक्षेप हो जाता है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट-प्रोफेसर
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)